10

आप सहायता हैं या रुकावट?

(3 यूहन्ना)

दो प्रकार के मसीही होते हैं: एक तो वे जो कलीसिया की सहायता करते हैं और दूसरे वे जो रुकावट बनते हैं। आप इनमें से कौन से हैं? 3 यूहन्ना में हमें दोनों प्रकार के उदाहरण मिलते हैं।

तीसरा यूहन्ना एक पत्री है, परन्तु यह रोमियों, इफिसियों और इब्रानियों की पत्रियों जैसी अन्य पत्रियों से अलग है, जिन्हें पत्रों के रूप में लिखी गई धर्मशात्रीय पुस्तकें कहा जा सकता है। इस नन्हे से पत्र में ''यीशु'' और ''मसीह'' शब्द तो नहीं मिलते हैं, पर ''नाम'' स्पष्ट रूप में हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम के लिए ही इस्तेमाल हुआ है। ''यीशु'' ही एक नाम है, जिसके द्वारा हमारा उद्धार हो सकता है, यह वह नाम है, जो सब नामों से ऊपर है, और यह वह नाम है जिसके अन्त में हर घुटना झुक जाएगा (प्रेरितों 4:12; फिलिप्पियों 2:9, 10)।

तीसरा यूहन्ना बहुत ही निजी पत्र है,[1] जो एक आदमी के दिल से दूसरे के दिल तक जाता है और निजी पत्रों की तरह इसमें लिखने वाले और प्राप्तकर्ता दोनों के मनों और जीवनों का विशेष हाल मिलता है। यह पहल सदी के अन्त की ओर कलीसियाई जीवन के नाटक में कई अन्य कलाकारों को नज़दीकी से दिखाना है।[2] आइए देखते हैं कि हम उनसे क्या सीख सकते हैं, जिनके नाम यूहन्ना ने दिए हैं।

हम 3 यूहन्ना पढ़ कर आरंभ करेंगे:

> [1]मुझ प्राचीन की ओर से उस प्रिय गयुस के नाम, जिस से मैं सच्चा प्रेम रखता हूं। [2]हे प्रिय, मेरी यह प्रार्थना है; कि जैसे तू आत्मिक उन्नति कर रहा है, वैसे ही तू सब बातों में उन्नति करे, और भला चंगा रहे। [3]क्योंकि जब भाइयों ने आकर, तेरे उस सत्य की गवाही दी, जिस पर तू सचमुच चलता है, तो मैं बहुत ही आनन्दित हुआ। [4]मुझे इस से बढ़कर और कोई आनन्द नहीं, कि मैं सुनूं, कि मेरे लड़के-बाले सत्य पर चलते हैं।
>
> [5]हे प्रिय, जो कुछ तू उन भाइयों के साथ करता है, जो परदेशी भी हैं, उसे विश्वासी की नाईं करता है। [6]उन्होंने मण्डली के सामने तेरे प्रेम की गवाही दी है: यदि तू उन्हें उस प्रकार विदा करेगा जिस प्रकार परमेश्वर के लोगों के लिए उचित है तो अच्छा करेगा। [7]क्योंकि वे उस नाम के लिए निकले हैं, और अन्यजातियों से कुछ नहीं लेते। [8]इसलिए ऐसों का स्वागत करना चाहिए, जिससे हम भी सत्य के पक्ष में उनके सहकर्मी हों।
>
> [9]मैंने मण्डली को कुछ लिखा था; पर दियुत्रिफेस जो उन में बड़ा बनना चाहता है, हमें ग्रहण नहीं करता। [10]सो जब मैं आऊंगा, तो उसके कामों की जो वह कर रहा है सुधि दिलाऊंगा, कि वह हमारे विषय में बुरी-बुरी बातें बकता है; और इस पर भी सन्तोष न करके आप ही भाइयों को ग्रहण नहीं करता, और उन्हें जो ग्रहण करना चाहते हैं, मना करता है: और मण्डली से निकाल देता है।

> [11]हे प्रिय, बुराई के नहीं, पर भलाई के अनुयायी हो, जो भलाई करता है। वह परमेश्वर की ओर से है; पर जो बुराई करता है, उसने परमेश्वर को नहीं देखा। [12]देमेत्रियुस के विषय में सब ने बरन सत्य ने भी आप ही गवाही दी: और हम भी गवाही देते हैं, और तू जानता है, कि हमारी गवाही सच्ची है।
>
> [13]मुझे तुझ को बहुत कुछ लिखना तो था; पर सियाही और कलम से लिखना नहीं चाहता। [14]पर मुझे आशा है कि तुझ से शीघ्र भेंट करूंगा: तब हम आमने-सामने बातचीत करेंगे: तुझे शान्ति मिलती रहे। यहां के मित्र तुझे नमस्कार करते हैं: वहां के मित्रों से नाम ले लेकर नमस्कार कह देना।
>
> [15] तुझे शान्ति मिलती रहे। यहां के मित्र तुझे नमस्कार कहते हैं। वहां के मित्रों से नाम ले लेकर नमस्कार कह देना।

दो आदमी, दो सीटों वाली साइकिल पर सीधी चढ़ाई चढ़ने की कोशिश कर रहे थे। इसके लिए तेज़-तेज़ पैडल मारने ज़रूरी थे। चढ़ाई चढ़ लेने के बाद वे बहुत हांफ़ रहे थे। एक ने कहा, ''बड़ा मुश्किल था! मुझे तो डर लग रहा था कि हम ऊपर नहीं आ पाएंगे।'' दूसरे ने उत्तर दिया, ''सही कहा, और अगर मैं पूरे रास्ते ब्रेक न दबाए रखता तो हम तो कभी भी पहाड़ी से फिसल सकते थे!''

संभवतया, प्रभु कलीसिया की हर मण्डली में सहायता करने वालों (पहाड़ी पर चढ़ने के लिए पैडल मारने वाले मसीही) के अलावा रुकावटें भी (ब्रेक को दबा कर रखने वाले) होती हैं। 3 यूहन्ना से कलीसिया के दोनों प्रकार के उदाहरणों पर विचार करते हैं।

मसीही लोग, जो कलीसिया के काम में सहायता करते हैं

यूहन्ना की पत्री मसीही लोगों की कई किस्मों की बात करती है, जिन्होंने प्रभु के कार्य को पूरा करने मे सहयोग दिया।

प्रेमी अगुवे

पत्र के लेखक ने अपने आप को ''प्राचीन'' बताया: ''मुझ प्राचीन की ओर से उस प्रिय गयुस के नाम, जिस से मैं सच्चा प्रेम रखता हूं'' (3 यूहन्ना 1) यह मानने के कि वह वास्तव में यूहन्ना प्रेरित ही था, बहुत से कारण हैं। इसका तर्क यह था कि इस पत्री में बताया गया है कि पहला मसीही प्रेरित यूहन्ना ही है, जिसने मसीह में एक भाई को यह पत्र लिखा। यूहन्ना के व्यवहार पर विचार करने से हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि कलीसिया के काम को पूरा करने के लिए प्रेमी अगुओं की आवश्यकता है।

काम के साथ उसका क्या सक्बन्ध था? उस प्रश्न के उत्तर के लिए हमें यह पता होना आवश्यक है कि काम क्या था! यूहन्ना को घूम रहे प्रचारकों की या मिशनरियों की चिन्ता थी। उनके लिए अपने काम को पूरा करने के लिए आवश्यक था कि उन्हें लोग और कलीसिया स्वीकार करें और उनकी सहायता करें।[3] 3 यूहन्ना में दिखाई गई परिस्थिति में गयुस ऐसे लोगों को स्वीकार कर रहा और उनकी सहायता कर रहा था; परन्तु दियुत्रिफेस उन्हें नकार रहा था। इस स्थिति को सुधारने में यूहन्ना की क्या भूमिका थी? वह एक अगुआ था, इस कारण उसने आग्रह

करके, सराहना करके, समझा कर और प्रेरणा देकर अगुआई की (3 यूहन्ना 10)। अगुआ होने के नाते उसकी ज़िम्मेदारी यह सुनिश्चित करना था कि काम हो।

उसने अपनी जिम्मेदारी कैसे पूरी की? 3 यूहन्ना के लेख में उसकी अगुआई में जो बात साफ़ दिखाई देती है, वह है प्रेम:

1. वह गयुस से प्रेम रखता था (3 यूहन्ना 1)।
2. गयुस के लिए प्रेम के कारण वह उसकी अगुआई अच्छे से कर पाया कि जैसे उसकी आत्मिक उन्नति हुई थी, वैसे ही वह इन सब बातों में बढ़े (3 यूहन्ना 2)।
3. अपने प्रेम के कारण वह दूसरों की आत्मिक भलाई पर ध्यान लगा पाया। उसे इससे बढ़कर कोई बात नहीं आती थी कि वह जाने कि जिनकी ज़िम्मेदारी उस पर है वे ''सत्य पर चलें'' (3 यूहन्ना 2; देखें आयत 4)।
4. परन्तु उसके प्रेम ने दियुत्रिफेस के पाप को छुपाया नहीं। उसने खुलकर दियुत्रिफेस के पाप की बात की और कहा कि जब वह आएगा तो उससे बात करेगा (3 यूहन्ना 9, 10)। उसने अपने नेतृत्व, अपने लाभ के लिए नहीं, बल्कि कलीसिया के लिए, गम्भीरता से लिया।

उसी प्रकार से आज अगर कलीसिया का काम किया जाना है यानी आत्माओं को बचाना है और कलीसिया को बनाना है तो कलीसिया में ऐसे अगुवे होने ही चाहिए। ऐसे लोग ज़िम्मेदारी को गम्भीरता से लेंगे, यानी सदस्यों ''सत्य पर चलने'' को प्रोत्साहित करेंगे, और उनकी वफ़ादारी के कारण उनसे प्रेम करेंगे, वे उनको भी सुधारेंगे, जो दियुत्रिफेस जैसे हैं।

सहारा देने वाले संत

3 यूहन्ना में वर्णित मसीही गयुस है।[4] उसके स्वभाव पर विचार करने पर हम निष्कर्ष निकालते हैं कि प्रभु के काम को पूरा करने के लिए सहारा देने वाले संतों की आवश्यकता है।

ध्यान दें कि यूहन्ना ने इस भाई को पहले क्या कहा: ''हे प्रिय, मेरी यह प्रार्थना है; कि जैसे तू आत्मिक उन्नति कर रहा है, वैसे ही तू सब बातों में उन्नति करे, और भला चंगा रहे'' (3 यूहन्ना 2)।[5] क्या आप चाहेंगे कि कोई आपके लिए प्रार्थना करे कि आप आत्मिक उन्नति के साथ और बातों में भी बढ़ें? कुछ मामलों में यह इस प्रचार से प्रार्थना करना होगा कि लोग कंगाल हो जाएं या बीमार पड़ जाएं; क्योंकि वे आत्मिक रूप में कंगाल हैं और उनकी आत्माएं मृत्युशय्या पर है: अपने आप को इस स्थिति में होने के बजाय हमें आत्मिक रूप से स्वस्थ होने की कोशिश करें, ताकि हमारे लिए भी वही किया जाए जो यूहन्ना ने गयुस के लिए कहा, उसकी आत्मा स्वस्थ थी! उसके आत्मिक स्वास्थ्य की क्या खूबियां थीं?

यूहन्ना के शब्दों मे शायद यह सुझाव है कि गयुस के जीवन से प्रेम, करुणा, धीरज, और भलाई जैसी मसीही विशेषताएं के प्रमाण की भरमार दिखाई देती थी। परन्तु गयुस के बारे में हम कुछ बातें अवश्य जान सकते हैं।

एक तथ्य यह है कि उसका जीवन सच्चाई का जीवन था: यूहन्ना ने कहा कि भाइयों ने उसकी सच्चाई की गवाही दी और जोड़ा कि गयुस ''सत्य पर चल रहा था'' (3 यूहन्ना 3)। विचार यह है कि उसने सच्चाई की बात मानी। उसकी सच्चाई उसके विश्वासों से मेल खाती थी। यानी उसका जीवन उसके विश्वास के अनुरूप था।

इसके अलावा, गयुस का जीवन सेवा भरा जीवन था: विशेषकर उस पर ध्यान दें जो यूहन्ना ने दूसरों की सहायता करने के लिए उसके बारे में कहा:

> हे प्रिय, जो कुछ तू उन भाइयों के साथ करता है, जो परदेशी भी हैं, उसे विश्वासी की नाईं करता है। उन्होंने मण्डली के साम्हने तेरे प्रेम की गवाही दी थी: यदि तू उन्हें उस प्रकार विदा करेगा जिस प्रकार परमेश्वर के लोगों के लिए उचित है तो अच्छा करेगा। क्योंकि वे उस नाम के लिए निकले हैं, और अन्यजातियों से कुछ नहीं लेते। इसलिए ऐसों का स्वागत करना चाहिए, जिससे हम भी सत्य के पक्ष में उनके सहकर्मी हों (3 यूहन्ना 5-8)

आयत 5 वाले भाई कौन हैं? गयुस ने उसकी सहायता की जो वचन का प्रचार करते और प्रेरितों के निर्देशों को पहुंचाने के लिए एक से दूसरी जगह जाते थे।

गयुस ने उनके लिए क्या किया? उसने उनकी सहायता की,[6] बल्कि अजनबियों के रूप में भाइयों की जिन्हें वह पहले नहीं जानता था। उसने उन मुसाफिर सुसमाचार प्रचारकों की उसके इलाके में आने पर सहायता की। उसकी सहायता करके वह सुसमाचार के लिए *अतिथि सत्कार करने वाला* था।[7]

गयुस से आग्रह किया गया कि वह इन मसीही भाइयों को विदा करे, और हम मान सकते हैं कि उसने उन्हें विदा किया। ''उन्हें विदा करेगा'' अभिव्यक्ति यह सुझाव देती है कि उन्हें अपने घर से अगली जगह तक पहुंचने के लिए भाड़ा देने में मदद की।[8] वह चंदा देने में *उदार* था, यानी अपने धन से सुसमाचार को फैलाने में सहायता करने को तैयार था।

अन्य शब्दों में उसने उनके साथ प्रेम दिखाया, फिर उन्होंने मण्डली के सामने उसके प्रेम की गवाही दी (3 यूहन्ना 6)। उसका यह प्रेम उसके पास आने वाले लोगों की सहायता करके दिखाया गया। मन में दबाए प्रेम को प्रेम कहना कठिन हो सकता है। वह *प्रेमी जन* था।

वे अन्य प्रकार से भाग लेते हैं, जैसे गयुस ने उनके लिए अपने घर के दरवाजे खेल कर किया। कलीसिया को सहारा देने वाले संतों की आवश्यकता है जो अतिथि सत्कार (मेहमानदारी) करने वाले, उदार और प्रेमी सज्जन हों।

आत्म बलिदान करने वाले सिपाही

इवैंजलिस्ट या सुसमाचार सुनाने वाले। तीसरा स्त्री लोगों के एक समूह के होने का संकेत देती है जो प्रचारक या मिशनरी हैं। उनसे हम सीख सकते हैं कि यदि कलीसिया का काम किया जाना है तो आत्म-बलिदान करने वाले सिपाहियों को आवश्यकता है। यूहन्ना ने कहा, ''वे उस नाम के लिए निकले हैं, और अन्यजातियों से कुछ नहीं लेते। इसलिए ऐसों का स्वागत करना चाहिए, जिससे हम भी सत्य के पक्ष में उनके सहकर्मी हों'' (3 यूहन्ना 7, 8)।
इन लोगों से हमें क्या सीख मिलती है?

(1) उन्होंने उसके लिए जो कुछ उसके लिए किया गया आभारी होना और उनकी तारीफ़ करना जिन्होंने उनकी सहायता की थी, याद रखा। यूहन्ना ने गयुस को बताया,

“उन्होंने मण्डली के साम्हने तेरे प्रेम की गवाही दी थी” (3 यूहन्ना 6)।

(2) उनका एक ही लक्ष्य परमेश्वर की सेवा करने का था; “वे उस नाम के लिए निकले” (3 यूहन्ना 7)।

(3) वे प्रभु के लिए बलिदान करने को तैयार थे; बाहर निकलकर वे “अन्यजातियों से कुछ नहीं लेते” थे (3 यूहन्ना 7)।

मसीह के इन सिपाहियों ने आर्थिक बलिदान किए थे। किसी सहायता की गारंटी न होने, अतिथ्य सत्कार और दानों के लिए हर जगह भाइयों पर निर्भर रहने और अविश्वासियों से किसी प्रकार की सहायता स्वीकार न करके ऐसी परिस्थितियों में स्थिर रहने के लिए बड़े विश्वास की आवश्यकता है।[9] मुझे नहीं लगता कि मैं ऐसी परिस्थितियों में स्थिर रह पाऊंगा। बहुत बार (केवल प्रचारकों या मिशनरियों के मामलों में ही नहीं), पूरे मन से परमेश्वर की सेवा करने के लिए आर्थिक बलिदान की आवश्यकता होती है।

परन्तु मुख्य विचार जिस पर हम ध्यान देना चाहते हैं वह यह है कि ये लोग प्रभु के राज्य को बढ़ाने में अगुआई कर रहे थे। वे परमेश्वर की सेवा में “अगली कतार वाले सिपाहियों” की तरह थे। वे राज्य के फैलाव के लिए अपने पूरे जीवन दे रहे थे। हमें कलीसिया में ऐसे लोगों की यानी प्रचारकों की आवश्यकता है जिनके जीवन का लक्ष्य वचन का प्रचार करना हो। काम हर किसी को करने की आवश्यकता है, पर सुसमाचार के प्रचार के जीवन के लिए अपने आप को देने की बुलाहट का उत्तर देने के लिए कुछ लोग अवश्य तैयार होने चाहिए।

जब मसीह लोगों इस प्रचार के कार्य में लगे हों तो उसके कार्य की कदर की जानी चाहिए। उन्हें सहारा और प्रोत्साहन दिए जाने की आवश्यकता है और उन्हें सुसमाचार प्रचार के अपने काम पर ध्यान लगाने देने की आवश्यकता है। यूहन्ना ने गयुस से इन भाइयों की सहायता करने का आग्रह किया।

1. उसने कहा कि सुसमाचार प्रचारकों को इस प्रकार विदा किया जाए “जिस प्रकार परमेश्वर के लोगों के लिए उचित है तो अच्छा करेगा” (3 यूहन्ना 6)। क्या इसमें यह सलाह है कि सहायता करने वालों को यह देखने की कोशिश नहीं करनी चाहिए कि वे अपने मिशनरियों को कितना कम दे सकते हैं; यानी कि उनके काम को कितना सस्ते में खरीद सकते हैं?

2. उसने उसकी सहायता करने वालों को भी यह कहकर प्रोत्साहित किया कि वे बाहर जाकर “अन्यजातियों से कुछ नहीं लेते” (3 यूहन्ना 7)। इसलिए उसने आग्रह किया कि “हम ऐसे लोगों की सहायता करें” (3 यूहन्ना 8)। क्योंकि उनका बलिदान हमारे बलिदानों का यानी हमारे उदारता से देने का हकदार है।

3. फिर उसने आगे कहा कि ऐसे काम करने वालों की सहायता करके हम “सत्य के पक्ष में उनके सहकर्मी” बन जाते हैं (3 यूहन्ना 8),[10] अन्य शब्दों में हम उसके साथ काम करते हैं। उनकी हर प्राप्ति हमारी प्राप्ति है।

आयत 11 के सम्बन्ध में टीकाकार सहमत हैं कि “बुराई के” दियुत्रिफेस के और “भलाई के” दिमेत्रियुस को कहा गया है इस आयत में संदेश यह है कि “दियुत्रिफेस जैसे न बनो बल्कि दिमेत्रियुस जैसे बनो, जिसका अब मैं वर्णन करूंगा।”[11]

दिमेत्रियुस। पूर्णकालिक काम करने वाले लोगों में जिनका यूहन्ना ने उल्लेख किया शायद दिमत्रियुस भी था: ''देमेत्रियुस के विषय में सब ने बरन सत्य ने भी आप ही गवाही दी: और हम भी गवाही देते हैं, और तू जानता है, कि हमारी गवाही सच्ची है'' (3 यूहन्ना 12)।

दिमेत्रियुस कौन था? इस पत्री में उसके बारे में यूहन्ना द्वारा जो कुछ बताया गया है उसके अलावा और कुछ पता नहीं है। शायद वही व्यक्ति था जो यूहन्ना के लिए पत्र लेकर जा रहा था। सम्भावना यह भी है कि उन कर्मियों में से एक था जिनका यूहन्ना ने अभी अभी वर्णन किया है।

उसके व्यवहार के लिए गवाही पर ध्यान दें: ''सब ने'' उसकी वफ़ादारी की गवाही दी; ''सत्य ने भी आप'' उसके काम की गवाही इस अर्थ में दी कि उसका जीवन सत्य के अनुसार था। यूहन्ना ने भी उसके अच्छे व्यवहार की गवाही दी। हर मसीही को ऐसा ही जीवन जीने का प्रयास करना चाहिए।

कलीसिया के काम को रोकने वाले मसीही

दियुत्रिफेस की बात करते हुए इस पत्री में दूसरी प्रकार के मसीही का यानी उनका वर्णन है जो काम पूरा करने में सहायता नहीं, बल्कि किसी न किसी प्रकार रुकावट बनता है।

जो दियुत्रिफेस ने किया

उसने क्या गलत किया? उसने आत्म बलिदान करने बाले सिपाहियों को स्वीकार नहीं किया: वह ''आप ही भाइयों को ग्रहण नहीं करता'' (3 यूहन्ना 10)। इसके अलावा उसने उनका स्वागत करने से दूसरों को रोका, और इतना आगे बढ़ गया कि उन्हें कलीसिया से विलास यानी संगति से अलग कर दिया फिर उसने यूहन्ना के अधिकार को जो प्रेरित था, मानने से इनकार कर दिया।

यूहन्ना ने उस कलीसिया जिसमें दियुत्रिफेस अगुवा था, पत्र लिखा था (3 यूहन्ना 9क), पर दियुत्रिफेस आज कलीसिया में ऐसे ही लोगों की आवश्यकता है। आवश्यक नहीं कि ऐसे चेले संसार के कठिन क्षेत्रों में वचन को सिखाने या प्रचार करने या कलीसिया स्थापित करने के लिए, बाहर जाए। इसके बजाय ये वे लोग हैं जो ऐसे काम करने वालों को आर्थिक रूप सहारा देते हैं, भावनात्मक रूप में सहारा देते हैं और उन्हें व्यक्तिगत रूप में सहारा देते हैं।[12] दियुत्रिफेस के विषय में यूहन्ना ने लिखा ''(वह) हमें ग्रहण नहीं करता ... हमारे विषय में बुरी बुरी बातें कहता है'' (3 यूहन्ना 9, 10)। शायद सुसमाचार का उसका अपना कोई संस्करण था। उसने यूहन्ना की सिखाई कोई बात नहीं मानी होगी। हो सकता है कि कोई विशेष सच्चाई हो जिसे उसने न माना हो। वह झूठा शिक्षक हो सकता है।[13] जो भी हो उसने यूहन्ना के अधिकार को मानन से इनकार कर दिया।

दियुत्रिफेस ने ऐसा क्यों किया

दियुत्रिफेस ने घूम रहे प्रचारकों को इनकार क्योंकि किया और उसने यूहन्ना के प्रचार को क्यों नकारा? यूहन्ना बताता है वह ''उन में बड़ा बनना चाहता है'' (3 यूहन्ना 9ख)। (KJV के अनुवाद में वह सर्वश्रेष्ठ बनना चाहता है।) दियुत्रिफेस साम्राज्य को बनाने वाला था,[14] और

स्थानीय कलीसिया उसका साम्राज्य था। यूहन्ना प्रेरित हो या कोई बाहर से आने वाला सुसमाचार प्रचारक वह नहीं चाहता था कि कोई मण्डली को दी जाने वाली उसकी दिशा में हस्तक्षेप करे या उसके अधिकार को कम करे।

क्या आज इस प्रकार के लोग हैं? मैंने उन्हें देखा है, छोटे लोग जो साम्राज्य बनाने वाले हैं यानी जो आगे लगना चाहते हैं। उनका लक्ष्य किसी मण्डली की सेवा करने के बजाय उस पर शासन करना होता है और वे मण्डली के भीतर सदस्यों से या मण्डली के बाहर प्रचारकों या मिशनरियों के किसी हस्तक्षेप के बिना इसे पाना चाहते हैं।

यदि सभी नहीं तो स्थानीय कलीसिया की अधिकतर समस्याएं ''दियोत्रिफेस की बीमारी''[15] यानी ''पहला'' बनने की इच्छा या सत्ता की भूख होती है। कलीसिया की अधिकतर समस्याएं वास्तव में यह होती है कि इंचार्ज कौन है, किसके पास ताकत होगी। सम्भवतया हम में से हर किसी ने थोड़ा बहुत दियुत्रिफेस अवश्य रहता है; प्रधान बनने की इच्छा स्थिति का भाग है। यदि ऐसा है तो यह एक ऐसी इच्छा है जिससे हमें लड़ना आवश्यक है, विशेषकर कलीसिया में। हमारा लक्ष्य यीशु के नमूने का अनुसरण करना चाहिए क्योंकि उसने कहा:

> और जो कोई तुम में प्रधान होना चाहे, वह सब का दास बने। क्योंकि मनुष्य का पुत्र इसलिए नहीं आया, कि उस की सेवा टहल की जाए, पर इसलिए आया, कि आप सेवा टहल करे, और बहुतों की छुड़ौती के लिए अपना प्राण दे (मरकुस 10:44, 45)।

यदि हमारा लक्ष्य सेवा के बजाय ''पहले बनना'' अर्थात स्वामी बनना है तो कलीसिया का काम रुक जाएगा। हमें इस कहावत को याद रखने की आवश्यकता है: ''यह अद्‌भुत है कि यदि कोई इस बात की परवाह न करे कि श्रेय किसे मिलता है तो वह कितनी भलाई कर सकता है।''

कलीसिया के काम में रुकावट बनने वाले दूसरे लोग

बेशक कलीसिया के काम पर अन्य मसीही लोगों का नकारात्मक प्रभाव हो सकता है।

(1) जो गलत शिक्षा देते हैं या सुसमाचार का प्रचार लिखे हुए के अनुसार नहीं करते, वे कलीसिया की हानि करते हैं।

(2) जो पाप में बने रहकर कलीसिया का अपमान करवाते हैं।

(3) जो कलीसिया में योगदान देने से इनकार करते हैं, अर्थात जो अपनी उपस्थिति, अपना समय, अपना धन या अपने तोड़े कलीसिया को नहीं देते, वे कलीसिया के विकास में रुकावट हैं।

(4) जो प्राचीनों के नेतृत्व को नहीं मानते वे कलीसिया के लिए यह हानिकारक हैं। कई बार कलीसिया की समस्या कमज़ोर नेतृत्व नहीं बल्कि कमज़ोर पीछे चलने वाले होते हैं।

(5) जो बिना कारण आलोचना करके कलीसिया में फूट डालते हैं वे कलीसिया को इसका उद्देश्य पूरा करने में रुकावट बनते हैं।

(6) जो किसी भी बात का जो कलीसिया के विकास में सहायक हो सकती है विरोध करते हैं वे कलीसिया के विकास में रुकावट डाल रहे हैं। वे उस आदमी की तरह हैं जिसने कहा, ''मैं पचास साल से इस कलीसिया का सदस्य हूं। मैंने कई बदलाव देखें हैं और मैं उनमें से हर बदलाव के विरुद्ध में हूं।''

सारांश

जब मैं नौवीं में पढ़ता था तो उस समय में मू, ओक्लाहोमा में जूनियर हाई फुटबाल टीम का क्वार्टर बैक था। हमारा जैक फ्रोस्ट नामक एक क्रोधी कोच था। एक दिन अभ्यास के दौरान मुझे ब्लॉक करने में लीड करना था। किसी प्रकार मैं गलती कर गया। मैं अचानक बाल ले जाने वाले के आगे चला गया और उसे नीचे फैंक दिया। कोच फ्रोस्ट मेरे ऊपर चिल्लाया, ''रोपर, अगर तुम रोक नहीं सकते, तो कम से कम रास्ते से तो हट जाओ।''

उसकी डांट हम में से कइयों के लिए जो कलीसिया के काम में रुकावट बन रहे हैं अच्छी सलाह है। हम उन्हें कहना चाहते हैं, ''यदि आप रोक नहीं सकते, यानी यदि आप कलीसिया के काम के लिए रास्ता साफ़ करने में सहायता नहीं कर सकते या नहीं करेंगे, तो कम से कम रास्ता छोड़ दें!'' हमें कलीसिया के काम में रुकावट न बनने के लिए सावधान होने की आवश्यकता है। हम दूसरों को वह काम करने से न रोकें जो वे कर सकते हैं। हम कलीसिया को वह पूरा करने से न रोकें जिसे पूरा करने के लिए इसे बनाया गया है।

आप इनमें से क्या हैं: क्या आप प्रेमी अगुवे, सहायता करने वाले संत या आत्मबलिदान करने वाले सिपाही हैं? क्या आप सचमुच दियुत्रिफुस की तरह इसके उलट तो नहीं जो कलीसिया को बढ़ने से रोकता या किसी अन्य प्रकार से खराब करता है? क्या आप सहायता करने वाले हैं या रुकावट बनने वाले, यानी जो कलीसिया को बनाता है या वह जो इसे गिराता है? क्या आप कलीसिया के काम में सहायता करते और इसे बढ़ावा देते हैं या इसका विरोध करते हैं? इस पर विचार करें।

यदि आपने अपने पापपूर्ण जीवन के कारण कलीसिया को बढ़ने से रोक रखा है, तो सुधार का समय अभी है।

टिप्पणियां

[1] यह अन्य पत्रों जैसा भी है जो उस समय में लिखे गए थे। एफ़. एफ़. ब्रूस ने कहा है, ''एक व्यक्ति द्वारा किसी व्यक्ति को सम्बोधित होने के कारण, तीसरी पत्री उस समय के यूनानी-रोमी संसार में पत्र लिखने के आम ढंग में दूसरी पत्री से भी निकट है।'' (एफ़. एफ़. ब्रूस, *दि एपिस्टल ऑफ़ जॉन: इंट्रोडक्शन, एक्सपोजिशन एंड नोट्स* [पृष्ठ नहीं: पिकरिंग एंड इंग्लिश, 1970; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1986], 146)। अधिकतर पत्रियां पहली सदी में आम तौर पर लिखे जाने वाले पत्रों से लम्बी हैं। (डी. ए. कार्सन, डग्लस जे. मू एंड लियोन मौरिस, *एन इंट्रोडक्शन टू द न्यू टैस्टामेंट* [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन, 1992], 232.)। [2]विशेषकर यह एशिया के इलाके में हमें कलीसिया की समझ देती है, जहां प्रेरित यूहन्ना ने काम किया। [3]मण्डलियों द्वारा मिशनरियों के चुने जाने और ठहराए जाने के समय, उन्हें यात्रा के पहले भाग के लिए अपनी सहायता का साधन देकर बाहर भेजते समय ऐसा किया जाता था। स्थापित मण्डलियां इन भाइयों को रास्ते में ग्रहण करतीं, कुछ देर तक उनकी देखभाल करती और फिर उनकी यात्रा के अगले भाग के लिए उनकी आवश्यकता पूरी करतीं। (ब्रूस, 149; जे. डब्ल्यू. रॉबर्ट्स, *दि लैटर्स ऑफ़ जॉन,* दि लिविंग वर्ड कमैंट्री [ऑस्टिन, टैक्सस: आर. बी. स्वीट कं., 1968], 175.)। [4]यूहन्ना ने गयुस को उसके ''बच्चों'' में शामिल किया इसलिए यूहन्ना ने उसे परिवर्तित किया हो सकता है। (रॉबर्ट्स, 173.) एक और सम्भावना यह है कि ''गयुस कई जवान साथी विश्वासियों में से एक है जिनके लिए [यूहन्ना] पिता समान लगाव और अपनेपन को महसूस करता है'' (ब्रूस, 149)। नये नियम में तीन और गयुसों का उल्लेख है (प्रेरितों 19:29; प्रेरितों 20:4; रोमियों 16:23)। परन्तु यह विश्वास करने का कोई कारण नहीं है कि गयुस को उन में से किसी से मिलाए जाए। गयुस पहली सदी के रोमी संसार में एक आम

नाम था। (ब्रूस,ख 147.)। [5]जे. डब्ल्यू. रॉबर्ट्स ने इस आयत के विषय में कहा, ''इस प्रकार यूहन्ना अपने विश्वास का दावा करता है कि गयुस आत्मिक ढंग में अच्छा कर रहा है और यह आशा व्यक्त करता है कि बताए गए अन्य पहलुओं में भी वह अच्छा ही करेगा'' (रॉबर्ट्स, 172)। [6]RSV में आयत 5 का अनुवाद है, ''यह शाही बात है जो तू करता है कि भाइयों, विशेषकर अजनबियों की किसी भी प्रकार की सेवा करे।'' [7]नया नियम मसीही लोगों के लिए आतिथ्य-सत्कार करने वाले होने की आवश्यकता पर ज़ोर देता है। देखें रोमियों 12:13; इब्रानियों 13:2; 1 पतरस 4:9; 1 तीमुथियुस 3:2; तीतुस 1:8; 1 तीमुथियुस 5:10. [8]''भेजना'' क्रिया रास्ते में सहायता या समर्थन का संकेत देती है। तुलना करें प्रेरितों 15:3; रोमियों 15:24; 1 कुरिन्थियों 16:6, 11; 2 कुरिन्थियों 1:16. (रॉबर्ट्स, 175.) [9]रॉबर्ट्स ने ध्यान दिलाया कि यह नियम पौलुस के ढंगों से मेल खाता था। देखें प्रेरितों 18:3; 20:34; 1 कुरिन्थियों 9:6-18; 2 कुरिन्थियों 11:7-11; फिलिप्पियों 4:14-19; 1 थिस्सलुनीकियों 2:9. (वही, 175-76.) मत्ती 10:9-15 से तुलना करें। [10]''पौलुस ने प्रचार की अपनी यात्राओं में अपने साथ जाने वालों तथा काम करने वालों का वर्णन करने के लिए 'सहकर्मी' शब्द का इस्तेमाल किया (रोमियों 16:3, 9; फिलिप्पियों 2:25; 4:3)'' (माइक वेस्टल, ''ए ग्रीटिंग एण्ड कमेंडेशन,'' *डेंटन लेक्चर्स* [1987], 283)। देखें रोमियों 16:9, 21; फिलेमोन 24. प्रचारक की सहायता करके सुसमाचार के प्रचार में भाग लेने वाले लोग प्रचारक के काम से मिले फल में भी भागीदार होते हैं (फिलिप्पियों 1:5; 4:10-18)। प्रचारकों/मिशनरियों की सहायता की आवश्यकता पर पौलुस द्वारा रोमियों 10:15क में ज़ोर दिया गया: ''यदि भेजे न जाएं तो प्रचार कैसे करें?''

[11]ब्रूस, 154 पर आधारित। [12]रॉबर्ट्स, 177. [13]रॉबर्ट्स ने कहा, ''दियुत्रिफेस ने प्राचीन के बजाय डॉक्ट्रिन के कारणों के लिए अर्थात झूठे शिक्षकों के प्रति झुकाव में यूहन्ना के भेजे हुओं को ग्रहण करने का विरोध किया होगा (1 यूहन्ना 2:18से; 4:1से)।'' [14]बाइबली अर्थों में, वह ''परमेश्वर की विरासत पर प्रभु बनने की कोशिश कर रहा था, जिसकी पतरस ने निंदा की (1 पतरस 5:3)'' (डब्ल्यू. डेन कार्टर, ''ए रिब्यूक एंड ए कंप्लीमेंट,'' *डेंटन लैक्चर्स* [1987], 290)। [15]यह शब्द प्रयोग ''सिंड्रोम'' अर्थात लक्षणों के मेल खाने के लिए है जो किसी बीमारी या असामान्य स्थिति का संकेत देते हैं।